Indian J. Soc. & Pol. 05(01):163-164:2018 **ISSN: 2348-0084(PRINT)**
UGC List No. 47956 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

प्रगतिशील चेतना के कुम्भकारः त्रिलोचन शास्त्री

पूजा सिंह[1a]
[1a]विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, अलनूर इण्टरनेशनल स्कूल सित्रा, बहरीन

ABSTRACT

आदि गंगा गोमती नदी के किनारे की निर्मल अविरल धारा ने स्वयं की तरह शांत, निर्मल एवम् अजर अमर जीवनदायिनी रचनाओं को गढ़ने वाले कई मनीषियों को जन्म दिया है– मजरूह सुल्तानपुरी, रामनरेश त्रिपाठी, पं0 रामकिशोर त्रिपाठी और त्रिलोचन शास्त्री। जिन्होने आधुनिक काल की प्रगतिशील धारा को नई चकाचौंध, कृत्रिमता से विल्कुल अलग हटकर उसे एक अलग पहचान दी। जीवन के अनमोल पहलुओं को छूने की बेकरारी जो मजरूह सुल्तानपुरी, रामनरेश त्रिपाठी एवम् पं0 रामकिशोर त्रिपाठी जैसे कई साहित्यकारों एवम् रचनाकारों ने की, उसी गर्भभूमि में एक और नाम स्वर्णिम अक्षरों में जुड़ने के लिए मां वीणावादिनी की साधना कर रहा था, जिसका नाम था वासुदेव सिंह (त्रिलोचन शास्त्री)। जिसने सूर्योदय की केसरिया रंग की उर्जा से भरे अपने दर्जनों सृजन द्वारा लागों तक समाज की बहुतेरी किरण रश्मियों को विखेरने का कार्य किया।

KEY WORDS: *प्रगतिशील कविता, त्रिलोचन शास्त्री, सुल्तानपुर*

कविता की यथार्थता की पुष्टि के लिए उन्होने उसे ठोंक–पीटकर अपने जीवन के आंवे में अपनी कविताओं को इस कदर पकाया कि असलियत पुख्ता करने में शक की कोई गुंजाइश ही नहीं छोड़ी। इसकी एक छटा देखी जा सकती है। **ताप के ताए हुए दिन से/क्षण के लघु मान से/ मौन नपा किए, चौंध के अक्षर/पल्लव पल्लव के उर में / चुपचाप छपा किये। अथवा सरसों के फूल बहुत नहीं/ रहते अपने ही रूप में/ अपने ही रंग में/ अपनों के बीच में/अपनों के संग में/ पीला बनाने के / लिए नहीं कहते।**

त्रिलोचन शास्त्री जी की कवितायें अत्यंत ही प्रेरणादायी हैं। जो वनसृजन को बढ़ावा देती हैं और उनके जीवन की दूरदर्शिता, लक्ष्य एवम् उद्देश्य का परिचायक हैं जो कि मार्क्सवादी मुक्तिवोध के साथ भी जुड़ गया। त्रिलोचन शास्त्री का जन्म सुल्तानपुर जिले के कठघरा चिरानी पट्टी में जगरदेव सिंह के घर 20 अगस्त 1917 को हुआ था। उनका मूल नाम वासुदेव सिंह था। उन्होने काशी विश्वविद्यालय से एम0ए0 अंग्रेजी एवम् लाहौर से संस्कृत में शास्त्री की उपाधि प्राप्त की। स्वतंत्रता के बाद हिन्दी साहित्य में जिन नई विचारधाराओं का जन्म हुआ उनमें प्रगतिशील विचारधारा प्रमुख थी। हिंदी कविता की प्रगतिशील काव्यधारा के त्रिमूर्ति स्तंभों में नागार्जुन,शमशेर बहादुर सिंह एवम् त्रिलोचन शास्त्री का नाम कालजयी है।

दरअसल भाषा , भावनाओं का वह दुकूल है जिसे वह उसी भाव भंगिमाओं के साथ जीवन के विभिन्न भावों को उसी कलेवर में आत्मसात कर लेती है जो जीवन सोपानों को आत्मीयता के साथ हम से जोड़े रखती है। इस परिप्रेक्ष्य में त्रिलोचन जी की भाषा–शैली विल्कुल सटीक बैठती है। जो कि अपनी एक अलग छाप साहित्य विधा के पटल पर अंकित करती है और पाठको ं के हृदय में रमण करती है। **जब भौंरे ने आकर पहले पहले गाया/कली मौन थी, नहीं जानती थी वह भाषा/इस दुनिया की कैसी होती है अभिलाषा/इस से भी अनजान पड़ी थी तो भी आया.....**

कवि त्रिलोचन पर सॉनेट का भारतीयकरण कर उसे लोकतत्व के रंग में रंगने का क्रांतिकारी जुनून इस कदर था कि अब लोकगीत और सॉनेट में भेद समझ पाना मुमकिन ही नहीं है। इस सराबोर चतुष्पदी को देखिये– **कभी सोचा मैं ने, सिर पर बड़े भार धर के, सधे पैरों यात्रा सबल पद से भी कठिन है/ यहां तो प्राणों का विचलन मुझे रोक रखता/रहा है, कोई क्यों इस पर करे मौन करूणा।**

त्रिलोचन की रचनाधर्मिता का मुख्य विषय ग्रामीण अंचल की सोधी रेणु से सराबोर है। जिसका कलेवर निम्न वर्ग है, जहां हलधर बिना किसी बनावटी जिंदगी के रहते हुए कभी सूरज को अपना भग्यविधाता मानता है तो कभी बादलों की आहट में अपने किस्मत के बंद तालों की चाभियों को तलाशते तलाशते प्रकृति के सामने नतमस्तक हो जाना ही अपना कर्तब्य समझता है।

त्रिलोचन जी ने बहुत ही पैनी नजर से इन गर्द, मिट्टी से सने सीधे–साधे किसानों की अकिंचन पहचान को कुछ इस कदर हृदयविदारक स्थिति में प्रस्तुत किया है, इसकी एक बानगी द्रष्टब्य है– **उस जनपद का कवि हूं/ जो भूखा–दूखा है, नंगा है अंजान है/कला नहीं जानता कैसी होती है वह/क्या है नहीं मानता।**

यह झकझोरने वाली शैली, जो उनकी सच्चाई विश्वास एवम् यथार्थ की टपकती हुई बूंदों को न जाने कब फव्वारों का रूप लेकर लोगों के दिलों को सींचते हुए मन को प्रफुल्लित कर गया– **घायल होकर गिरा सिपाही और कराहा/ एक तमाशबीन दौड़ा आया फिर बोला/''योद्धा होकर तुम कराहते हो'', यह चोला/ एक सिपाही का है जिस को सभी सराहा करते हैं।**

त्रिलोचन शास्त्री हिन्दी के अतिरिक्त अरबी और फारसी भाषाओं के निष्णात ज्ञाता माने जाते थे। पत्रकारिता के क्षेत्र में भी वे काफी सक्रिय रहे हैं। उन्होने प्रभाकर, वानर,हंस, आज, समाज जैसी पत्र–पत्रिकाओं का संपादन किया। उनकी पहली कविता संग्रह 'धरती' 1945 में प्रकाशित हुई थी। 'गुलाब और बुलबुल'

1: Corresponding Author

'उस जनपद का कवि हूं' और ताप के ताए हुए दिन' उनके चर्चित कविता संग्रह हैं।

त्रिलोचन जी की भाषा शैली सभी भाषाओं की जननी प्राचीन संस्कृत एवम् अवधी की जड़ों से फूटकर साहित्य में फलने फूलने लगी जिसकी सुगंध ही त्रिलोचन जी का सानिध्य महसूस करवाती है। पाठकों को अपने नजदीक लाने की कला में वे इतने माहिर जान पड़ते हैं कि कविताओं की एक एक पंक्ति फोटोग्राफर का झरोखा जान पड़ता है। जिस प्रकार छायाकार अपने कैमरे में सब कुछ यथावत, सहेजकर, संभालकर कैद करता है– **चम्पा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती/मैं जब पढ़ने लगता हूं वह आ जाती है/ खड़ी –खड़ी चुपचाप सुना करती है/उसे बड़ा अचरज होता है : इन काले चिन्हों से कैसे ये सब स्वर/निकला करते हैं.....**

उनके ग्रामीण अंचल के भावों का गलियारा गीत, गजल, सॉनेट, कुंडलियां, बरवै, मुक्तक, छंद जैसे माध्यमों से होकर गुजरा। लेकिन सॉनेट चतुश्पदी ने उनकी पहचान को एक मुकाम तक पहुंचाने में जबरदस्त भूमिका अदा की । सॉनेट की खूबसूरती से सराबोर इस चतुष्पदी को देखिये–**चम्पा कहती है/ तुम कागद ही गोदा करते हो दिन भर/क्या यह काम बहुत अच्छा है / यह सुनकर मैं हंस देता हूं/ फिर चम्पा चुप हो जाती है।**

सॉनेट के साधक त्रिलोचन जी ने आंचलिकता के भावों को समझाने की जिम्मेदारी उन्होने अपने मजबूत कंधों पर लिया और उसे बखूबी निभाया भी। त्रिलोचन जी प्रकृति के उपादानों के साथ रमें, उसे जिया, निहारा, और तब पाठक के समक्ष उसे परोसा। उनके काव्य में न तों आधुनिकता की सस्ती लोकप्रियता है और न ही कोई ओछापन।उनका काव्य तो जीवन के सच्चाई को प्रस्तुत करने का जीता जागता प्रमाण है, जिसमें सलमें–सितारे से भरे हुए व्यक्तित्व की कृत्रिमता से लबालब जीवन–शैली का वह वीभत्स रूप भी देखने को मिलता है जो धूल, मिट्टी एवम् कीचड़ से सने लोगों से मुह फेरकर अलग दुनिया का सानिध्य प्राप्त करना चाहती है । त्रिलोचन जी की लेखनी ने अपमानित एवम् तिरस्कृत लोगों को एक दर्जा प्रदान कर उन्हें साकार रूप में हम सबके सामने जीवंत कर दिया।

इसप्रकार शोषितों की आवाज बनकर, अपने जीवन के अमूल्य धरोहर को आने वाले पीढ़ी को सौंपकर 10 दिसंबर 2007 में वे इहलोक से अलविदा कर गयै। त्रिलोचन जी की प्रगतिशील चेतना और क्षेत्रीयता की खुशबू को हमारे जीवन में प्रसारित कर किसी और जीवन का नवसृजन करने के लिए इस दुनिया से तो चले गये लेकिन सुधिजनों के लिए छोड़ गये– आंचलिकता एवम् आधुनिकता का ऐसा मदमस्त, मस्तमौला, फकीराना अंदाज, जो आज हम लोगों के हृदय में रमणीय है।

संदर्भ

सिंह, केदारनाथ : *त्रिलोचन दस्तावेज*

मिश्र, सत्यप्रकाश : *त्रिलोचन की देशी कवितायें,* पृ0127

शास्त्री, त्रिलोचनः *ताप के ताए हुए दिन,* पृ015

: *तुम्हें गांव की याद,* पृ075

: *अनकही भी कुछ कहनी है,* पृ087

: *उस जनपद का कवि हूं,* पृ0 93

भारत दर्शन, हिन्दी साहित्यिक पत्रिका पृ0 23

हिन्दी सॉनेट के शिखर पुरूष, *बीबीसी* 5.5.2007

त्रिलोचन शास्त्री नहीं रहे, *अमर उजाला,* 10.12.2007